बाबा ने बनाया डबल डॉक्टर

● ब्रह्माकुमारी डॉ.लता, धार (म.प्र.)

स्त्री रोग विशेषज्ञ के रूप में वर्तमान समय मैं निजी नर्सिंग होम (चौहान हॉस्पिटल, 35 Beded) में अपने सर्जन पति डॉ. कमल सिंह चौहान के साथ सेवारत हूँ। दोनों पुत्र रत्न भी डॉक्टर हैं। जिन्दगी में कई चुनौतियों का सफलतापूर्वक सामना किया है परन्तु प्रैक्टिस शुरू करने के बाद मुझे अक्सर तीन-चार दिन में भयंकर माइग्रेन (सिरदर्द) होता था और उल्टियां भी होती थीं। मुझे उस दौरान यदि कोई ऑपरेशन करना होता था तो 10-15 मिनट पहले इन्जेक्शन स्टेमेटिल या वोवेरॉन लगवाना पड़ता था। जीवन में सब कुछ (नाम, मान, शान, पैसा) प्राप्त होने के बावजूद मुझे महसूस होता था कि मेरा जीवन डॉक्टरी पेशे के अलावा अन्य किसी कार्य के लिये है। कई बार इच्छा होती थी कि सबकुछ छोड़कर शान्ति की तलाश में हिमालय पर चली जाऊँ।

यहाँ इतना अच्छा क्यों लग रहा है?

सन् 1998 में ब्रह्माकुमारी आश्रम के भाई-बहनें माउन्ट आबू में आयोजित डॉक्टरों के शिविर का निमंत्रण देने आये थे। विषय था 'डॉक्टरी पेशे में तनाव मुक्त कैसे रहें?' मुझे बहुत अच्छा लगा, तुरन्त तैयार हो गये। अन्य डॉक्टर युगल को भी साथ ले गये। ज्ञान सरोवर पहुँचते ही हमें दिव्य अनुभूति हुई। सुबह राजयोग की पहली क्लास में सम्मिलित हुए। आत्मा के बारे में बहुत विस्तृत ज्ञान मिला। हम सोचने लगे, डॉक्टर तो बन गये हैं परन्तु अपने आप को नहीं पहचाना कि हम कौन हैं, कहाँ से आये हैं, जीवन का उद्देश्य क्या है। शाम को वरिष्ठ डॉक्टर ब्रह्माकुमार प्रेम मसन्द भाई से वार्तालाप हुआ तो पूछा, यहाँ इतना अच्छा क्यों लग रहा है, सबके चेहरे हर्षित हैं, हर कोई, हर एक की मदद करना चाहता है, सब ईमानदारी से अपना कार्य कर रहे हैं, कोई निर्देश देने वाला नहीं और असीम शान्ति की अनुभूति हो रही है। तब उन्होंने बताया कि यह कोई साधारण संस्था नहीं है, स्वयं परमात्मा ने आकर इसे स्थापित किया है, यहाँ विश्व परिवर्तन का कार्य चल रहा है। जिन्होंने साधारण रूप में अवतरित परमपिता परमात्मा को पहचाना वे इस यज्ञ में समर्पित होकर समर्पण भाव से ईश्वरीय कार्य कर रहे हैं।

दूर हो गये तनाव और माइग्रेन

यहाँ आकर हमें जीवन का नया उद्देश्य मिला कि हमें डबल डॉक्टर बनकर ईश्वरीय कार्य में मददगार बनना है। भगवान इतनी दूर से आये हैं, हम कम से कम उनके मददगार तो बन सकते हैं ना। स्व परिवर्तन से ही विश्व परिवर्तन हो सकता है। अब हम ट्रस्टी हो गये हैं, हॉस्पिटल को रूहानी हॉस्पिटल बना दिया है जहाँ से निरन्तर परमात्मा का संदेश दिया जा रहा है। अब हम नि:शुल्क स्वास्थ्य शिविर आयोजित करते हैं तथा स्कूलों में नैतिक मूल्यों की शिक्षा देते हैं। राजयोग के अभ्यास तथा ईश्वरीय सेवा से तनाव, माईग्रेन अपने आप दूर हो गए हैं। समय प्रति समय हमारी कार्य प्रणाली में आने वाली परेशानी को हल करने में ईश्वरीय ज्ञान की मुरली सहायक होती है। मुरली से हमने सीखा कि व्यक्ति अगर गलत कार्य कर रहा है तो उसके प्रति शुभभावना, शुभकामना रखकर उसे सही शिक्षा दी जा सकती है। यदि उसे जताया गया कि आप गलत हैं तो वह भी हमारे मार्ग पर रोड़े अटकाएगा और सिद्ध करने की कोशिश करेगा कि आप उससे भी ज्यादा गलत हैं। अत: अपने शुद्धिकरण द्वारा दूसरों के शुद्धिकरण का मार्ग बाबा ने दिखाया है। ❖